International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मेवाड़ की सांसण प्रणाली एवं उसका महत्व

श्रीमती अंजना बारठ

सह–आचार्य इतिहास, राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर

शोध सारांश

भारतीय संस्कृति में भूमिदान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भूमिदान परम्परा प्राचीन समय से हमारी राजनीतिक प्रणाली में अस्तित्वमान रही है। पौराणिक राजा पृथु एवं बलि भुमिदान के लिए विख्यात रहें हैं। बौद्ध एवं जैन साहित्य में अनेक उदाहरण इस परम्परा के हमें मिलते हैं। रामायण में अश्वमेध एवं विश्वजीत यज्ञ की दक्षिणा में भूमिदान का उल्लेख मिलता है। महाभारत में पुण्य के लिए भूमिदान को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में ब्राह्मण आदि विद्वानों एवं राजकीय कर्मियों को भूमिदान देने का निर्देश दिया गया है। प्राचीन अभिलेखों एवं ताम्रपत्रों में भूमिदान के अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं।

मुख्य शब्दः मेवाड, सांसण प्रणाली, भुमिदान, ताम्रपत्र, दान।

सांसण प्रणाली भूमिदान की प्राचीन परम्परा का ही अंग है। राज्य की ओर से दान अथवा पुरस्कार के रूप में गांव या भूखण्ड दिया जाता है, उसे स्थानीय भाषा में 'सांसण' कहा जाता है। कर मुक्त होने के कारण इसकी गणना माफी की भूमि में की गई है। मेवाड़ में इसके लिए पट्टों व ताम्रपत्रों में गरास्या शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ कवल (कवा) से है अर्थात् आजिविका के लिए दिया गया गांव अथवा भूखण्ड।[1] इस प्रणाली के प्रादुर्भाव के विषय में कहा जा सकता है कि मेवाड़ के महाराणाओं ने जब विरान भूखण्ड आबाद किए तब ब्राहम्ण, चारण, भाट, जोगी, सन्यासी आदि जाति के लोगों को आजीविका हेतु भूमि प्रदान की एवं उन्हें बसाया। राजघराने में विविध अवसरों, तीर्थ यात्रा एवं अन्य धार्मिक आयोजनों के समय ब्राह्मणों को पुण्यार्थ भूमि प्रदान की जाती थी। चारण व ब्राह्मणों को उनकी साहित्यिक सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप गांव व भूखण्ड प्रदान किए गए। इस प्रकार सांसण धारकों का एक वर्ग धीरे–धीरे निर्मित हो गया। इस भूमि से न तो राजस्व लिया जाता था और न उनसे भूमि जब्त की जाती थी। पीढ़ी दर पीढ़ी वे अपनी भूमि का उपयोग करने का अधिकार रखते थे। उन्हें भूमि को बेचने एवं महाराणा की आज्ञा के बिना भूमि अपने सगे सम्बन्धियों को देने का अधिकार नहीं था। इस प्रकार के भूखण्ड एवं गांव राज्य के सीधे नियंत्रण में आते थे, इनकी गणना खालसा क्षेत्र में की जाती थी।

मेवाड की सांसण भोगी मुख्य जातियां एवं घराने :–

(1) ब्राहमण, भट्ट :– प्राचीन समय से ही धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराने में ब्राह्मणों की विशेष भूमिका रही है। इनमें भट्ट एवं पुरोहित परिवारों का नाम उल्लेखनीय है। महाराणा उदयसिंह ने उदयसागर की प्रतिष्ठा के समय लक्ष्मीनारायण एवं छीनू भट्ट को भूखण्ड गांव सांसण में दिया था। महाराणा जगतसिंह प्रथम ने कृष्ण भट्ट जिसने जगन्नाथराय की प्रशस्ति की रचना की उसे भैसड़ा गांव प्रदान किया। मधुसूदन भट्ट को महाराणा राजसिंह के समय में बड़ा सम्मान मिला। मधुसूदन के पुत्र रणछोड. भट्ट ने 'अमरकाव्यम' और 'राजप्रशस्ति' की रचना की। महाराणा राजसिंह ने भट्ट परिवार को अनेक गांव प्रदान किए।

(2) पुरोहित :– राजोर के स्वामी माणिकचंद चौहान ने खानवा के युद्ध (1527 ई.) में महाराणा सांगा की सहायता की। बाद में इन चौहानों को कोठारिया की जागीर मिली. तब बागीश्वर को ठिकाने का पुरोहित बनाया गया। महाराणा उदयसिंह के राज्य काल में बागीश्वर के पौत्र नरु के द्वितीय पुत्र राम को महाराणा के दरबार में पुरोहित नियत किया

गया। उसे राहमरजाद (Master of Ceremony) के प्रबन्ध का दायित्व दिया गया। भगवान व काशी पुरोहित को महाराणा प्रताप ने ओड़ा गांव प्रदान किया।[2]

चारण :– **(1)** आशिया परिवार– महाराणा उदयसिंह ने जब पाली के स्वामी अखेराज सोनगरा की पुत्री जयंतीदेवी के साथ विवाह किया उस समय करमसी आशिया पाली (मारवाङ) से आकर मेवाड़ में आकर रहा। उसे सांसण में पसून्द गांव प्रदान किया गया। करमसी के पौत्र खेतल को महाराणा जगतसिंह प्रथम ने मेघटिया ग्राम दिया। खेतल के पुत्र गिरधर आशिया ने 'सगतरासो' ग्रंथ की रचना की। इनके प्रपौत्र मानसिंह आशिया ने 'महावजस प्रकाश' ग्रंथ लिखा।[3]

(2) आढा परिवार :– आढा चारण मारवाड के पंचेटिया (पाली जिला) ग्राम के थे। विख्यात दुरसा आढा के वंशज पनजी महाराणा अरिसिंह के राज्यकाल में मेवाड़ में आ गए। उसे करणवास व जासोल के अलावा सायों व धनजी का खेड़ा मिला।

(3) दधवाड़िया :– महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास दधवाड़िया गौत्र के चारण थे। उनके पूर्वज रूण के सांखले राजाओं के 'पोलपात' थे। उनको दधिवाड़ा गांव सांसण में रुण के साखलों ने प्रदान किया तब से 'दधवाड़िया' कहलाये। पहले ये चारण देवल कहलाते थे। जोधपुर के राव जोधा ने जब सांखलों से रूण का इलाका हस्तगत कर लिया तब वे अपने भांजे महाराणा कुंभा के पास चित्तौड़ आ गए। दधवाड़िया जैता को नाहर मगरा के दो गांव धारता व गोढ़या मिले। महाराणा सांगा ने जेता के पुत्र मेहपा को ढ़ोलकिया और उसके अनुज माडण को शावर गांव सांसण में दिया।[4]

(4) महियारिया :– महियारिया शाखा के चारण सिद्धपुर पाटन से मेवाड़ में आए। ये केसरिया के वंशज होने के कारण केसरिया चारण कहलाए। केसरिया के प्रपौत्र माण्डण मेवाड़ में जा गए तब महाराणा से उन्हें राजसमंद तहसील का महियारी गांव प्रदान किया तब से ये महियारिया के नाम से विख्यात हुए। महाराणा जगतसिंह के काल में देवीदास महियारिया द्वारा गंभीर अपराध किए जाने के कारण उसे उदयपुर छोड़ना पड़ा परन्तु सावर (मेवाड़) ठिकाने के गोकुलदास शक्तावत ने 27 गाँव सांसण में देकर देवीदास को अपने यहाँ रख लिया।[5] इसके अतिरिक्त अनेक चारणों को मेवाड. राज्य की ओर से सांसण के रूप में अनेक गाँव प्रदान किए गए।

सांसण प्रदान करने की प्रक्रिया में पहले सांसण धारियों को कागज पर पट्टा दिया जाता फिर उस भूमि पर स्वत्व हो जाते पश्चात स्थायी अनुदान का अंकन तांबे की चद्दर पर कर दिया जाता था। प्रारम्भ में श्री गणेशाय नमः, रामो जयति, श्री एकलिंगजी आदि अंकित करने के पश्चात चूंडावतों के त्याग का प्रतीक भाला एवं उस पर शक्तावतों का अंकुश तथा राज्य की तरफ से सही का अंकन किया जाता था। मूल पाठ में दाता अर्थात् महाराणा का नाम सांसण पाने वाले का नाम, सांसण देने का कारण और भूमि (गांव या भूखण्ड) का विवरण होता था। भूमि का नाप, किस्म आदि के साथ ही आवश्यक निर्देश भी इसमें उत्कीर्ण किए जाने थे। जागीर के पट्टे भी इसी प्रकार से दिए जाते थे किंतु जागीर के पट्टे अस्थायी होने के कारण ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण नहीं किए जाते थे।

निष्कर्ष :

सांसणधारियों ने विशेष रूप से साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ब्राह्मणों ने संस्कृत के अनेकानेक ग्रंथों की रचना की वहीं चारणों ने डिंगल काव्य का सृजन कर साहित्य को समृद्ध बनाने में योगदान दिया धार्मिक क्रिया–कलापों एवं अनुष्ठानों में ब्राह्मणों द्वारा महत्त्वपूर्ण भुमिका का निर्वहन किया गया। अनेक नदियों, जलाशयों का निर्माण किया गया जिससे कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। चारणों ने अपनी लेखनी से जन–जन में स्वाधीनता की भावना जागृत करने का उल्लेखनीय कार्य किया एवं जन–जन में आत्मविश्वास, स्वाभिमान व देशप्रेम की भावनाएँ भी जागृत की।

सांसण प्रणाली ने राज्य की आर्थिक स्थिति पर गंभीर प्रभाव छोड़े। राज्य क्षेत्र का एक बड़ा भाग सांसण प्रणाली के तहत प्रदान किया गया था इससे राज्य की आय पर प्रतिकूल असर पडा। सांसण प्राप्त करने वालों का वर्ग चूंकि दायित्व से मुक्त था इसलिए समाज का यह वर्ग शिथिल होता गया। सांसण प्रणाली के कुछ दोष होते हुए भी इसका विशिष्ट महत्व था, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में इस प्रणाली का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भाटी, डॉ. हुकुमसिंह, राजस्थान की संस्कृति और इतिहास के विविध आयाम, राजस्थानी ग्रंथागार जयपुर, 2017, पृ.सं. 63
2. ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–2, पृ. 1025–26
3. महावजस प्रकाश सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर।
4. वीर विनोद, भाग–1 पृ. 180–182
5. भाटी, डॉ. हुकुमसिंह, राजस्थान की संस्कृति और इतिहास के विविध आयाम, राजस्थानी ग्रंथागार जयपुर, 2017, पृ.सं. 65
6. महाराणा राजसिंह परगना बही
7. अमरकाव्यम् – साहित्य संस्थान, सं.–देव कोठारी
8. भीम विलास
9. चक्रपाणि मिश्र विश्ववल्लभ ग्रंथ।